# संजीवनी बुटी

।। श्री गणेशाय नमः ।।
।। श्री स्वामी समर्थाय नमः ।।
जय गजवदना गणनायका गणनाथा गजमुखा।
सब देवो के आरंभ मे तुझे ही देखा।।१।।
जय जय जय सरस्वती माता सकल विद्या की दाता।
करे हंस सवारी बुध्दी की माता।।२।।
कुल का करे संभाल कुलदेव सहित कुलमाता।
सदा सुख देवे प्रचंड समृध्दी की दाता।।३।।
हे स्वामी गुरुदेव दिजे जीवन को आकार।
बनावे इस भगत को करे सुभाग्य को कृपार।।४।।
सद्‌गुरु स्वामीने किया ये ऐलान।
ज्योत जगालो जीवन की जान लो ऐहसान।।५।।
पान करो संजीवन बुटी, मंत्र का करे उच्चार।
मृतक को देवे जीवन यही उस की लिलार।।६।।
खोले भाग्य द्वार नेहलावे बारंबार।
असाध्य को नाश करके स्वास्थ्य करे साकार।।७।।
जीवनरुपी भूमी पे बिमारी है भंवर।
खिलाके संजीवन बुटी करे रोग को आवर।।८।।
भोगरुपी पोटला, करे दुःखरुपी सागर।
संजीवनी ज्योत जलाके, करे जीवनरुपी जागर।।९।।
शिवरुपी दंडे से घुलावे मनरुपी समंदर।
दुःख को छोडके सुख को करे अंदर।।१०।।
जान डालके दवामे, दुवा चले संग।
भगावे कष्ट को, जीवन को दे नयी उमंग।।११।।
सुखरुपी दवा को, देवे ज्ञानरुपी भावना।
मंत्ररुपी जागर से, बुटी करावे अमृत जाना।।१२।।
फुंक के तारक मंत्र करावे संजवीन।
प्राशन करनेसे, भोग का करे धावन।।१३।।

नवनाथरुपी खल में, स्वामीरुप दंडा।
धन्वंतरी की आज्ञासे, घुलावे यह कुंडा।।१४।।
भावित करे दवाको, संतरुपी संग।
बने त्रिमूर्तीरुप बुटी, भक्त को करे दंग।।१५।।
ऐसी संजीवन बुटी होवे चमत्कारी।
जान देवे मृतक को, स्वामीरुपी अवतारी।।१६।।
संजीवन बुटी की लीला है अपरंपार।
भक्तों के रोगों को झट से फटकार।।१७।।
अघोरी विद्या, जारणादी होये भयंकारा।
बुटी मंत्र के ध्यान मात्र से भक्त को देवे छुटकारा।।१८।।
भक्त हनुमान जैसे रामचंद्र सीता को तारे।
वैसे बुटी ध्यान मात्र से सारे रोगों को मारे।।१९।।
उठा के गोवर्धन, कृष्ण भक्त की रक्षा करे।
दु:ख सारके, बुटी सुख की छाया धरे।।२०।।
यह बुटी विश्व में रहे गुणज्ञानी।
स्वामी साई के वर से, करे संजीवन मानी।।२१।।
ब्रह्मरुपी छाया दुरावे सृष्टी की माया।
भावीत हुई बुटी सफाया करे मन काया।।२२।।
विष्णुरुपी जलसे, दवा को करे भावन।
बुटी को बांधके, मृतक को करे संजीवन।।२३।।
तिन्हो दोष धातुमल मे मिश्रित होके बनावे रोग।
संजीवन बुटी नाश करे, मन काया का भोग।।२४।।
धन्वंतरी का लेके ज्ञान, मिलाके स्वामीजी का विज्ञान।
संजीवन करे बुटी, पारब्रह्म मे लगावे ध्यान।।२५।।
पंचभूतों को मिलाके, बांधे बुटी गोल।
माया को मिटावे, बुझे रोगों का घोल।।२६।।
आच्छादन करे शेष फणा, रक्षण करावे परशुराम।
कुंठित करे कुमार्ग, बुटी देवे आराम।।२७।।
पिता का लेके आशीर्वाद माता की लेके आस।
अंजन करके दोनों का संजीवन करे खास।।२८।।

संजीवन बुटी कर के कमाल, उडावे धमाल।
मार के त्रिदोष, स्वास्थ्य का करे संभाल।।२९।।
सुरज से लेके जीवन चंदा से लेके प्रिणन।
बुटी को करे भावन, वहीं रोगों का करे धावन।।३०।।
रोगपीडों का कुआ है बहोत ही गहन।
डाल के संजीवन बुटी, रोगी को दे जीवन।।३१।।
वटवृक्ष की छाया मे बैठे स्वामी फुंके आदेश।
परमज्योती जलाके, बुटी को संजीवनी दे भावेश।।३२।।
चंदन घी से, घिसके सुगंध बाटे।
सुंगध से मन को मोहे, विशाद को जल्द से काटे।।३३।।
वर लेके स्वामीका, आनंद ही आनंद लुटे।
बुटी करे संजीवन, दारिद्रय तो झट से छुटे।।३४।।
ऋण से माया, माया से ऋण खेले भागंदौड।
संजीवन बुटी जान डाले, यही भारी गौड।।३५।।
स्वामी तूही माई, माई के रुप में देखी आई।
बंधन को खोलके, जिंदा करे तूही साई।।३६।।
मुठ्ठी मे लेके बुटी, ध्यान करावे निरंजन।
दु:ख दारिद्य को मारे, यही सुखरुपी अंजन।।३७।।
ज्ञान की गुफा, गुफा मे विज्ञानरुपी हाथी।
पान करे बुटी, सत को बनावे जीवनसाथी।।३८।।
स्वामी तूही मायबाप बुटी मे मारे फुंकर।
संजीवन करे, ज्ञान बुटी को सुंगकर।।३९।।
ऐसे है स्वामीजी की ज्ञानरुपी संजीवन बुटी।
सत्य को प्रगट करने, वो ही माया से छूटी।।४०।।

स्वामींनी ध्यानावस्थेत हे स्तोत्र दिलेले आहे.
ह्या स्तोत्राच्या पठणाने औषधांमध्ये संजीवत्त्व येते
आणि शरीराच्या व मनाच्या रोगावर मात होऊन
स्वस्थ जीवन प्राप्त होते.
तसेच हे रोज पठण केल्याने घरातील रोगराई दूर पळते.